राकेश कुमार 'धनराज'
की
कविताएँ

गुमनाम जिंदगी
(इतिहास को पढ़ते हुये)

इतिहास है जैसे एक रेत का समंदर
मृग-मरीचिका सी भूल-भुलैया
जहां जिंदगी और मौत की बीच की पूरी जद्दोजहद
कैद हैं हर एक समयान्तराल में
या किसी फाइल या ग्रन्थों के बीच दबा पड़ा हैं अब भी ऐसे-जैसे
किसी समंदर के तलहठी में छिपा कोई ख़जाना।

खोजने पर जहां कहींभी मिले आदमी का निशान
वहीं उसके आस-पास रहा होगा
उसका कुनबा उसका गाँव उसका संसार
जिसकी जुगत में करता रहा होगा वह
दिन-रात हाड़-तोड़ मेहनत
किसी के खेतों घरों या अन्य ठिकानों पर काम।

वहीं उसके आस-पास ही रहा होगा
कोई एक राजाया महाराजा
जगीरदार जमींदार ठीकेदार इजारेदार
जोतदार कस्तकार रैयत या फिर कोईएक किसान
जिसके खेतो घरों या उसके अन्य ठिकानों पर काम कर
बमुश्किल से कमा लेता था वह
अपने परिवार के लिए
दो छटाँक अनाज।
ऐसे किसी आदमी का निशान बमुश्किल से मिलता हैं
किसी इतिहास की किताब में
सन 1770 से 1970 के दशक तक
कमोबेश कहा गया जिसे –
कुली कमिया कमारया बेठ-बेगार
बनिहार बंधुआ-मजदूरया ऐसाही कई अन्य उपनाम
जो जीता रहा अपनी गुमनाम ज़िंदगी
जिसका जिक्र कभी एक इंसा जैसा हुआ ही नहीं।

दसहरा का मेला

(फुटपाथी जिंदगी-बसर करने वाले लोगों के नाम)

मां-बेटी मेला घुमने नहीं आयीं हैं
जैसे आज सड़कों पर लोग आये हैं
पर आयीं हैं दो बड़े बोरो के साथ
बिखरे हुए बोतलों को समेटने।
पेट की आग रहने और पहनने की समस्या से बड़ी है।

सड़कों की पगडंडियों पर
रात-भर रेंगती हुई भीड़ (मेला) ने
इन्हें अपने सोने के ठिकानों से वंचित कर दिया है
पर माथे पर सिकन नहीं इनकी
होठों पर मुस्कान है।
दुर करेगी यही समस्या
पेट की आग (भूख)
और उनकी अपनी कुछ तंगहाल परिस्थितियों को
देर रात या यों कहें कि पूरी-पूरी रात
व्यस्त रहेंगी ये मां-बेटी
उसी जुगत में।
मां-बेटी मेला घुमने नहीं आयीं हैं
जैसे आज सड़कों पर लोग आये हैं।

मनजीत सिंहआप जीवित या मृत

एक कविता,
और हम दोनों
मैं और मेरी मोहब्बत
खामोशी में उदास है
कहते हैं
मैं आज के बाद
आपकी चुप्पी स्वीकार नहीं करूंगा
मैं अपनी चुप्पी स्वीकार नहीं करूंगा
मेरा जीवन आपके चरणों में बर्बाद हो गया है
मैं आपका चिंतन करता हूं..
और मैं आपसे सुनता हूं..
और तुम बोलते नहीं..
मेरी खंडहर चीख
तुम्हारे हाथों में है
अपने होंठ को हिलाओ
मैं बोलता हूं
ताकि मैं बोल सकूं
मैं चिल्लाता हूं
ताकि मैं चिल्ला सकूं
मेरी जीभ अभी भी सूली पर चढ़ी हुई है
शब्दों के बीच
जीना शर्म की बात है
सड़कों पर कैद
एक मूर्ति बने रहना
कितने शर्म की बात है
और चट्टानें बता रही हैं
कि आपके नौकरों ने लंबे समय से क्या खोया है
सारी प्रार्थनाएं आप में एकजुट हो गईं
और आप दुनिया के लिए एक तीर्थस्थल बन गए
मुझे बताएं
कि मृतकों की चुप्पी क्या बता सकती है
तुम्हारे दिमाग में क्या है?
मुझे बताओ..
जमाना बीत गया..
और राजा झुक गए..
और सिंहासन गिर गए
और मैं कैद हो गया...
तुम्हारी खामोशी मेरे चेहरे पर
जीवन के लिए एक खंडहर हैं
वही खंडहर हैं इस दुनिया में आपका चेहरा।
क्या आप मर चुके हैं...
या जीवित हैं?
लेकिन आप कुछ ऐसे हैं
जो मैं नहीं जानता
आप न तो जीवित हैं...
और न ही मृत.....।

जनाब ये जिंदगी है

जीलो आज और कल हरदम बेझिझक
जनाब हमें जिंदगी बार-बार नहीं मिलेगी
जीवन में ढेर सारे ग़म और कहीं कहीं खुशी है जनाब

गम लेकर बैठे तो तुम हमेशा उदास रहो,
खूबसूरत है जनाब ज़िन्दगी हर पल खुश रहो
जिंदगी भर हर पल तुम्हें याद रहे ऐसी जियो
गम के पल याद हो या ना हो खुशी के पल जरूर करो याद
पर खुशियों और ग़म के हर पल हमेशा याद रहेंगे जनाब

जात-पात धार्मिक भेदभाव को खत्म करो,
घुल मिल कर चलते रहो भाईचारा कायम कर
आपस में लड़ते रहोगे कब तक यूं ही हर रोज़
प्रेम से रहना सीखो मोहब्बत का पाठ पढ़ाया करो

नफरत की जंजीर को तोड़कर आगे बढ़ते हुए
जीवन मे आनंद लेना सीखो आगे बढ़ते हुए
साम्प्रदायिक दुश्मन को पछाड़ तो सबको आगे बढ़ते हुए
भाईचारे की तरह रहना सीखो आगे बढ़ते हुए
जिंदगी नहीं मिलेगी दोबारा यूं व्यर्थ ना गंवाओ
गमों को भूलकर उदासियों को भूलकर खुशियां लाओं
खुशहाली में रहना सीखो मिल जुल कर रहो
गमों को पछाड़ कर और खुशी से जीना सीखो जनाब